

मरंग गोडा नीलकंठ हुआ उपन्यास में चित्रित विकिरण प्रदूषण

बिष्टप्पा तळवार

सह प्राध्यापक - हिंदी विभाग
एफ.एम.के.एम.सी कॉलेज, मडिकेरी

सारांश:-

‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ उपन्यास में चित्रित विकिरण प्रदूषण पर आधारित यह आलेख आदिवासी साहित्यकार महुआ माजी के उपन्यास के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, विकिरण प्रदूषण और आदिवासी विस्थापन की समस्या को उठाता है। लेखक बिष्टप्पा तळवार बताते हैं कि आज के भूमंडलीकरण और विकास के नाम पर जंगलों की कटाई, युरेनियम खनन और परमाणु कचरे के कारण आदिवासी समाज सबसे अधिक प्रभावित हो रहा है।

उपन्यास के नायक सगेन और अन्य पात्रों के माध्यम से लेखिका महुआ माजी विकिरण के घातक प्रभावों—बांझपन, विकलांग बच्चों का जन्म, कैंसर, टी.बी. आदि—को रेखांकित करती हैं। उन्होंने चेरनोबिल दुर्घटना का उदाहरण देकर दिखाया है कि विकिरण कितना विनाशकारी हो सकता है। लेखिका टेलिंग डैम की अनियमितताओं, सुरक्षा मानकों की अनदेखी, आदिवासियों का शोषण और सरकार की उदासीनता की आलोचना करती हैं।

आलेख में आदिवासी साहित्यकारों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया गया है, जो प्रकृति संरक्षण और जागरूकता फैलाते हैं। निष्कर्ष में कहा गया है कि विकास केवल आर्थिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और मानवाधिकारों के साथ होना चाहिए। उपन्यास आदिवासी संघर्ष को साहित्यिक रूप देते हुए समूचे समाज को चेतावनी देता है कि आदिवासियों का शोषण अंततः पूरे पर्यावरण और समाज को नुकसान पहुंचाएगा।

बीज शब्द -विकिरण प्रदूषण, युरेनियम खनन, आदिवासी विस्थापन, पर्यावरण संरक्षण, मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, टेलिंग डैम, परमाणु कचरा, आदिवासी साहित्य, विकास बनाम शोषण, चेरनोबिल दुर्घटना, नैचुरल रिसोर्सेस प्रोटेक्शन ऐक्ट.

आज के दौर में पर्यावरण संरक्षण एक महत्वपूर्ण और वैश्विक मुद्दा बन चुका है। पिछले कुछ दशकों में, बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण में कई बदलाव देखे गए हैं। इस दौरान मनुष्य ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जंगलों की अन्धाधुंध कटाई की है, जिसके परिणामस्वरूप न केवल जंगलों का नुकसान हुआ है, बल्कि वहाँ रहने वाली विभिन्न प्रजातियाँ, जैसे कि पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ और आदिवासी समाज भी संकट में हैं। इन आदिवासियों का जीवन पूरी तरह से प्रकृति से जुड़ा हुआ है और उनके अस्तित्व की बुनियाद जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है।

आज का युग भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद और उत्तर-आधुनिकता का है, और इस युग में पर्यावरण प्रदूषण ने एक गंभीर समस्या का रूप ले लिया है। विशेष रूप से विकिरण की समस्या ने चिंता को और भी बढ़ा दिया है। समय के साथ यह समस्या इतनी विकराल होती जा रही है कि उसका समाधान ढूँढ़ना मनुष्य के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। इस संकटपूर्ण समय में आदिवासी साहित्यकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से न केवल प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता को उजागर करते हैं, बल्कि समाज में इसके प्रति जागरूकता फैलाने का भी कार्य

करते हैं। आदिवासी साहित्यकारों का यह कार्य न केवल उनके सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, बल्कि यह उनके जीवन के अनुभवों का प्रतिफल भी है। उनका साहित्य इस बात को दर्शाता है कि प्रकृति के प्रति सच्ची समझ और सम्मान केवल आदिवासी समाज में ही नहीं, बल्कि पूरे समाज में फैलाना कितना आवश्यक है।

आदिवासी साहित्यकारों का लेखन उनके भीतर के आवेग, बेचैनी, जीवंतता और ईमानदारी को व्यक्त करता है। उनकी लेखनी में यह ईमानदारी उनके व्यक्तिगत अनुभवों से उभरती है, क्योंकि आदिवासी समुदाय प्रकृति से सीधे जुड़ा हुआ है और उसे अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा मानता है। जब वे प्रकृति और जंगलों के संरक्षण की बात करते हैं, तो यह केवल एक विचार नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व का एक सच है। अतः, यह कहा जा सकता है कि आदिवासी साहित्यकारों का कार्य केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज को एक गहरी सोच और संवेदनशीलता की ओर प्रेरित करता है। उनका उद्देश्य न केवल पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना है, बल्कि यह भी है कि मनुष्य अपनी प्रकृति और धरती से जुड़कर उसे नष्ट होने से बचा सके। आज की दुनिया में, जहाँ पर्यावरण संकट गंभीर रूप ले चुका है, आदिवासी साहित्यकारों का यह संदेश और उनकी मेहनत और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ उपन्यास में जो समस्या बताई गई है, वह मूलतः विकिरण से होने वाला प्रदूषण और आदिवासियों के विस्थापन की है। इसमें महुआ माजी ने विकिरण प्रदूषण से आदिवासियों और उनके आस पास के इलाकों में हो रहे दुष्प्रभाव को न सिर्फ रेखांकित किया है, अपितु उसके निवारण के लिए भी उपाय सुझाने का प्रयास किया है।

‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ शीर्षक में नीलकंठ शब्द का संबंध नीलकंठ वाले शिव जी से जोड़ा गया है। “समुद्र मंथन के समय निकले विष को पृथ्वी के कल्याण के लिए शिव जी ने सेवन किया था जिसके कारण उनका कंठ नीला हो गया और उन्हें नीलकंठ कहा जाने लगा। मरंग गोडा ने भी देश के विकास के लिए खदानों से निकालने वाले विकिरण और प्रदूषण को अपने में समाहित कर लिया जिस कारण मरंग गोडा नीलकंठ हो गया है।”

सेंटर फॉर साइंस ऐंड एनवायरनमेंट (विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र) की निदेशिका सुनीता नारायण ने इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित एक कार्यक्रम में खनन के कारण देश भर में पैदा हुए हालात पर रोशनी डालते हुए यह सवाल दागा था- “Why the poorest people live on India's richest lands?” बात सच है क्योंकि जिन आदिवासियों को विस्थापित व बेघर कर उन्हें लटने का प्रयास किया जा रहा है, अवश्य ही वह प्रदेश प्राकृतिक खजाने से भरा हुआ ही होगा।

उपन्यास के नायक सगेन के माध्यम से लेखिका ने युरेनियम की खोज को एक मुख्य उपलब्धि तो मानी ही है लेकिन इसके लिए जो कीमत अदा की जा रही थी, वह ना काबिले मंजूर थी। वे बताती हैं कि “उन्हें यह महसूस हो रहा था कि न जाने कितने मासूमों के स्वास्थ्य की कीमत पर मिली है यह कामयाबी और न जाने कितनों को बर्बाद करने की

कुवत रखता है यह बमा" क्योंकि इतिहास बताता है कि चेरनोबिल हादसे में संयंत्र में मौजूद 190 टन युरेनियम डाइऑक्साइड के चार प्रतिशत से भी कम विघटित तत्व ही रियेक्टर से बाहर निकले थे। इसके बावजूद दुनिया भर में उसका असर देखा गया। संयंत्र में उपस्थित 32 लोगों की तो मौके पर ही विकिरण से मौत हो गयी थी। कुछ ही दिनों के अंदर रेडियोधर्मी बीमारियों के कारण अन्य 39 लोगों की जान चली गयी। इस हादसे में निकले रेडियोधर्मी पदार्थों का अधिकांश मलबा यूक्रेन, रूस और बेलारूस तक फैल गया था जिस कारण वहां के लगभग साढ़े तीन लाख लोगों को ले जाकर दूसरे इलाकों में बसाना पड़ा। जीवित शहर वीरान हो गए। इसके अलावा उत्तरी ध्रुव के लगभग सभी देशों में रेडियोधर्मी पदार्थों के कण पाए गये।" जिसने आज तक वहाँ के वातावरण को दूषित कर रखा है और आज भी बच्चे किसी न किसी विकलांगता के साथ जन्म ले रहे हैं।

इसी उपन्यास में लेखिका इस बात पर ध्यान आकर्षित करती हैं कि पूरी दुनिया में, जहां जहां युरेनियम खदानें हैं, जैसे- अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका... हर जगह के आदिवासी किसी न किसी रूप में पीड़ित व प्रताड़ित हैं। यह एक विडंबना ही है कि अधिकतर युरेनियम खदानें, परमाणु रियेक्टर या परमाणु कचरा फेंके जाने वाले टेलिंग डैम आदिवासी इलाकों में ही होते हैं। यह बात और है कि जहां के लोग जागरूक हैं, वहां सुरक्षा मानकों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है और जहां जागरूकता कम है वहां के लोग ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

इसके विपरीत यदि मरंग गोडा की बात की जाए तो पता लगता है कि वह जगह केवल लोगों के लिए ही नहीं बल्कि पशु पक्षियों तथा पेड़ पौधों के लिए भी हानिकारक है। लेखिका बताती हैं- "टेलिंग डैम से मात्र पचास फीट की दूरी पर बसा है एक गांव? यह तो अंतर्राष्ट्रीय मानकों के बिल्कुल खिलाफ है। वहाँ रहना तो बहुत खतरनाक है।" उनका इस बात पर भी आक्रोश है कि चंद पैसों के लिए जिन खदानों में आदिवासियों से माइनिंग का काम कराया जा रहा है वहाँ पर उनकी सुरक्षा का तक ध्यान नहीं दिया जाता जिसके कारण उस प्रदेश में बसे आदिवासी कई बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। इस विषय में सगेन का कहना है- "यह कैसी विडंबना है कि हमारी औरतें बांझ हो रही हैं...हमारे बच्चे विकलांग पैदा हो रहे हैं...हमारे लोग जवानी में ही कैंसर या टी.बी. से मर रहे एक हैं और हम इसके विरोध में आवाज उठाते हैं... कोई कदम उठाते हैं तो देशद्रोही करार दिये जाते हैं! कमाल है! यह कैसा लोकतंत्र है? यह कैसी सभ्यता है?"

यहाँ लेखिका न सिर्फ अधिकारियों, बल्कि सरकार को भी दोषी करार दे रही हैं। युरेनियम कितना घातक है और इससे हड्डियों का कैंसर और किडनी खराब होने जैसी गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं, यह जानते हुए इस बात का एहतियात नहीं किया जाता है कि जो खदान में काम कर रहा है, उसे सही पोशाक मुहैया कराए या फिर उसके स्वास्थ्य को समय समय पर जाँचा जाए।

आज कल शहरों में ही नहीं बल्कि गांव देहात में भी कचरा फेंकने के लिए अलग जगह बनाई गई है। अगर ऐसा नहीं होता है तो कम से कम यह सुविधा तो है ही कि उसे सही तरह से ठिकाने लगाया जाए लेकिन विकिरण से होने वाले कचरे पर सरकार का ध्यान क्यों नहीं गया? सगेन को लगता है कि आदिवासी कमजोर और नासमझ हैं, यह सोच कर मरंग गोडा में कचरा लाकर फेंका जाने लगा। इसका विरोध करने के लिए मरंग गोडा के आदिवासियों ने एक संगठन बनाया जिसमें कहा गया - "हम कमजोर नहीं हैं, अकेले भी नहीं हैं, यही बताने के लिए तो यहां जुटे हैं हम सब। इस सम्मेलन का लक्ष्य ही है आदिवासी इलाकों में युरेनियम खनन का... आणविक कचरों के जमावड़े का विरोध करना..."

नैचुरल रिसोर्सेस प्रोटेक्शन ऐक्ट-2005 के कार्यान्वयन में साथ देना... परमाणु इंधन मामलों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता कायम करना।" इसी के साथ सगेन का यह सवाल ध्यान में आता है कि टेलिंग डैम आखिर आदिवासियों के इलाके में ही क्यों बनाया जाए सत्ताधारी लोगों की बस्ती में... दिल्ली, कोलकाता, मुंबई या चेन्नई जैसे शहरों में क्यों नहीं?

इन खदानों में काम करना आदिवासियों की मजबूरी है क्योंकि गरीबी और विस्थापन के कारण उनका गुजारा मुश्किल होता जा रहा है। वे कहीं भी काम करके अपना पेट तो पाल लेंगे मगर विकिरण का क्या? उससे कैसे बचेंगे? वह कहता है- "विकिरण तो हमें बाद में मारेगा! मगर भूख तो हमें कुछ ही दिनों में मार डालेगी। अपने बाल बच्चों को कब तक भूख से तड़पते देखा जा सकता है?..."

जो भी मजदूर युरेनियम की खदानों काम करते हैं वे विकिरण के सीधे संपर्क में आते हैं उनमें से कितनों को तो विकिरण की मात्रा को रिकॉर्ड करने वाला यंत्र 'डोजीमीटर' भी पहनने के लिए नहीं दिया जाता। उस यंत्र के बिना कैसे पता चलेगा कि उस व्यक्ति को विकिरण की कितनी मात्रा मिल चुकी है और वह खदान में दोबारा काम के लिए जा भी सकता है या नहीं। जिस कारण खदान में काम करता करता वह विकिरण की बली चड जाता है।

निष्कर्ष-

"मरंग गोडा नीलकंठ हुआ" जैसे उपन्यासों ने आदिवासी साहित्य में न केवल उनके संघर्ष और शोषण को सामने लाया है, बल्कि यह भी दर्शाया है कि विकास के नाम पर जब किसी समुदाय का शोषण किया जाता है तो इसका असर केवल उस समुदाय पर नहीं, बल्कि समूचे समाज पर पड़ता है। विकिरण प्रदूषण और विस्थापन की समस्याएँ यह सिद्ध करती हैं कि जब तक आदिवासी समाज को उनके अधिकार नहीं मिलते और उनके जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा नहीं की जाती, तब तक सच्चा विकास संभव नहीं है। इस प्रकार के साहित्य ने हमें यह समझने की आवश्यकता दी है कि विकास केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि मानवाधिकार और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए होना चाहिए। आदिवासी समाज के संघर्ष को समझना और उनकी मदद करना न केवल एक साहित्यिक, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक दायित्व है।

संदर्भ सूची :-

1. <https://sahityakunj.net/entries/view/aadivaasi-jeevan-aur-hindi-upanyas-marangagodha-neelkanth-huaa>
2. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ 364
3. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ. 198
4. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ. 218
5. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ 223
6. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ 249
7. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ 343
8. मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, महुआ माजी, राजकमल पेपरबैक्स, 2019, पृ 362